भोगवृत्ति: शरीर, मन और अस्तित्व का उपभोग

भोग से बोध तक की वैचारिक यात्रा

विश्व धर्म संघम बोध श्रृंखला 31

NotebookLM

सामान्य भ्रांति

भोग = केवल कामवासना, मैथुन या इन्द्रियसुख

व्यापक सत्य

जन्म से मृत्यु तक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया।
शरीर, मन, संबंधों, विचारों और दुःखों का उपभोग।

NotebookLM

उपयोग
+
अनुभूति / संतुष्टि
=
भोग

जहाँ उपयोग है, वहाँ किसी न किसी स्तर पर भोग उपस्थित हो सकता है।

NotebookLM

जन्म से ही शुरुआत: जैविक आधार



नवजात शिशु की इच्छाएँ जैविक हैं। जीवित रहने की आवश्यकताएँ ही शरीरगत भोग की प्रारंभिक अवस्थाएँ हैं।

NotebookLM

शरीर का उपभोग: श्रम बनाम तप

शरीर का उपयोग

तप

निर्माण और साधना हेतु प्रयुक्त

श्रम

केवल भोग पूर्ति हेतु प्रयुक्त

दोनों में शरीर प्रयुक्त होता है,
पर दिशा भिन्न होती है।

NotebookLM

इन्द्रिय मार्ग: संसार का अनुभव



इन्द्रिय भोग स्वाभाविक है। समस्या भोग में नहीं, बल्कि अनियंत्रित आग्रह में उत्पन्न होती है।

NotebookLM

जैविकी से जटिलता: वासना का विकास

पशु जगत

केवल जैविक व्यवस्था

- साथी चुनना, आकर्षण, जीवन संरक्षण

मानव जगत



जैविकी से आगे

यहीं मानव की जटिलता आरम्भ होती है।

NotebookLM

मनोविलास: अदृश्य भोग का चक्र



कई लोग वास्तविक सुख से अधिक कल्पित सुख में जीते हैं।

NotebookLM

संबंधों का सत्य: भोग बनाम प्रेम

जब संबंध केवल उपयोग तक सीमित रह जाते हैं, व्यक्ति दूसरे को साधन की तरह देखने लगता है।

भोग



- मंशा: ग्रहण करना
- मूल प्रश्न: मुझे चाहिए।
- प्रकृति: दूसरे को साधन समझना

प्रेम



- मंशा: देना और समर्पण
- मूल प्रश्न: तुम्हें क्या चाहिए?
- प्रकृति: करुणा और उत्तरदायित्व

NotebookLM

मानव चेतना का जागरण: आत्म-निरीक्षण

मानव और पशु में क्या अंतर है?
मानव स्वयं को देख सकता है।



यहीं आत्मचिन्तन प्रारम्भ होता है।
भोग स्वयं में गलत नहीं है, प्रश्न उसके संतुलन और दिशा का है।

NotebookLM

भोग से बोध की यात्रा



मनुष्य केवल भोग में सीमित रह सकता है,
या चेतना का विकास कर सकता है।

NotebookLM

जो अपने भोग को देखने लगता है,
वह केवल उपभोग करने वाला जीव नहीं रहता...
वह स्वयं को समझने वाला प्राणी बन जाता है।

NotebookLM